नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

यह मानवता की सामूहिक पराजय

110 दिनों तक चले ईरान-अमेरिका संघर्ष का अंत आखिरकार शांति समझौते के रूप में सामने आया है. जिनेवा में दोनों पक्ष वार्ता की मेज पर लौट आए हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह शांति वास्तव में जीत है ? जब किसी युद्ध की समाप्ति 7,500 से अधिक मौतों, लाखों लोगों के विस्थापन और लगभग 162 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक तबाही के बाद होती है, तब इतिहास इसे किसी पक्ष की विजय नहीं, बल्कि मानवता की सामूहिक पराजय के रूप में दर्ज करता है.

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस युद्ध में चार बड़े लक्ष्य लेकर प्रवेश किया था,ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकना, तेहरान की सैन्य क्षमता को कमजोर करना, क्षेत्रीय प्रभाव को सीमित करना और पश्चिम एशिया में अमेरिकी प्रभुत्व को मजबूत करना. लेकिन युद्ध समाप्त होते-होते तस्वीर उलट गई. ईरान न केवल राजनीतिक रूप से अधिक संगठित होकर उभरा, बल्कि पूरे इस्लामी जगत में उसके प्रति सहानुभूति और समर्थन भी बढ़ा. जिस शासन को कमजोर करने की कोशिश की गई, वह पहले से अधिक मजबूत दिखाई दे रहा है. युद्ध का सबसे बड़ा नुकसान आम नागरिकों ने उठाया. हजारों परिवार उजड़ गए, अस्पताल और बुनियादी ढांचे नष्ट हुए, लाखों लोग शरणार्थी बनने को मजबूर हुए.

आधुनिक युद्धों की यही सबसे बड़ी त्रासदी है कि निर्णय सत्ता के गलियारों में होते हैं, लेकिन कीमत आम जनता चुकाती है. मिसाइलें और ड्रोन किसी सैनिक और नागरिक के बीच अंतर नहीं करते. युद्ध की आग जब भड़कती है, तो उसमें इंसानियत सबसे पहले झुलसती है. आर्थिक दृष्टि से भी यह संघर्ष विनाशकारी साबित हुआ. तेल बाजार में उथल-पुथल मची रही. कच्चे तेल की कीमतों में तेज वृद्धि ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया. भारत जैसे आयात-निर्भर देशों पर इसका सीधा असर पड़ा. पेट्रोल और डीजल महंगे हुए, परिवहन लागत बढ़ी और महंगाई का दबाव आम लोगों तक पहुंचा. सोना और चांदी जैसे सुरक्षित निवेश साधनों की कीमतें भी बढ़ीं. यह युद्ध केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को झकझोर गया. हालांकि युद्धविराम के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य के खुलने और ऊर्जा आपूर्ति सामान्य होने की उम्मीद है, लेकिन जो नुकसान हो चुका है उसकी भरपाई आसान नहीं होगी.

युद्ध समाप्त होने के बाद भी उसके घाव वर्षों तक समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति पर दिखाई देते हैं. पुनर्निर्माण, पुनर्वास और विश्वास बहाली की प्रक्रिया लंबी और कठिन होती है. इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर साबित किया है कि सैन्य शक्ति किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है. अंतत: वही हुआ जो शुरुआत में ही होनी चाहिए थी यानी बातचीत. यदि 110 दिन पहले संवाद का रास्ता चुना गया होता, तो हजारों जानें बच सकती थीं और अरबों डॉलर की बर्बादी रोकी जा सकती थी.

आज जब दुनिया अनेक संघर्षों और भू-राजनीतिक तनावों से घिरी हुई है, तब ईरान-अमेरिका युद्ध का सबक स्पष्ट है. युद्ध शुरू करना आसान है, लेकिन उसके परिणामों को नियंत्रित करना असंभव. शांति केवल समझौतों से नहीं आती, बल्कि इस स्वीकारोक्ति से आती है कि किसी भी संघर्ष में सबसे मूल्यवान चीज मानव जीवन है. यदि शांति तक पहुंचने के लिए हजारों लोगों की जान चली जाए, तो वह शांति नहीं, मानवता की बहुत महंगी कीमत पर खरीदी गई मजबूरी होती है.

भारत की नई कृषि यात्रा

फसल से आगे, समृद्धि की ओर

शिवराज सिंह चौहान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बीते 12 वर्षों में भारतीय कृषि एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है. पहले हमारी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि देश में अनाज की कमी न हो, किसी तरह भूख से बचाव हो जाए. आज मोदी जी की दूरदर्शिता और किसान-हितैषी नीतियों ने कृषि को सिर्फ उत्पादन का क्षेत्र नहीं रहने दिया, बल्कि किसान की समृद्धि, जोखिम-सुरक्षा, पोषण सुरक्षा, हरित तकनीक और ग्रामीण विकास का समन्वित आधार बना दिया है. हरित क्रांति के बाद पहली बार नीतियों का फोकस केवल कितना उत्पादन पर नहीं, बल्कि किसान की वास्तविक आय कितनी, खेती कितनी टिकाऊ, और ग्रामीण अर्थव्यवस्था कितनी मजबूत पर आ गया है.

इसी सोच से दलहनङ्कतिलहन मिशन, कॉटन मिशन, प्राकृतिक खेती मिशन, प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना, खेत बचाओ अभियान, डिजिटल कृषि और शोधङ्कनवाचार; सबको एक ही व्यापक दृष्टि से जोड़ा जा रहा है.

आज भारत खाद्यान्न उत्पादन में 3765.63 लाख टन के रिकॉर्ड स्तर पर है, जो देश के इतिहास में सबसे ज्यादा है. धान, गेहूँ, मक्का, दालें और तिलहन- सभी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है. यह केवल ज्यादा पैदावार नहीं, बल्कि कुल ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आए विस्तार और मजबूती का प्रमाण है. साथ-साथ, मोदी सरकार ने किसान की जोखिम-सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी है. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत अब तक 22 किस्तों के माध्यम से किसानों के खातों में सीधे 4.27 लाख करोड़ रुपए से अधिक की सहायता पहुँच चुकी है, जिससे 9 करोड़ से ज़्यादा किसान परिवारों को हर साल नियमित आय-समर्थन मिलता है. वहीं, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना ने देशभर में करोड़ों किसान-आवेदनों को कवर करते हुए फसल के नुकसान की स्थिति में एक मजबूत बीमा कवच दिया है. सिंचाई, ग्रामीण सड़कों, कृषि-अवसंरचना, वेयरहाउस और कोल्ड-चेन में निवेश ने उत्पादन, भंडारण और बाज़ार तक पहुँच- तीनों को मजबूत किया है. कृषि अब सिर्फ खेत की मेड़ तक सीमित नहीं है. डेयरी, मत्स्य, कुक्कुट, बागवानी, मधुमक्खी-पालन, खाद्य-प्रसंस्करण, भंडारण, ग्रामीण उद्योग, सौर ऊर्जा और सेवा-क्षेत्र; सब मिलकर नई ग्रामीण अर्थव्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं.

> इन सभी प्रयासों की रीढ़ विज्ञान, अनुसंधान और डिजिटल तकनीक है. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली ने 2014-25 के बीच लगभग 3,000 जलवायु-सहनशील फसल किस्में विकसित की हैं, जिनमें सूखा, बाढ़, लू, लवणीयता और अन्य तनावों को झेलने की क्षमता है. कुल मिलाकर 3,800 से ज़्यादा उच्च-उपज किस्में और 200 से अधिक बायोफोर्टिफाइड किस्में जारी की गई हैं, जो उत्पादकता के साथ-साथ पोषण सुरक्षा भी मजबूत करती हैं. डिजिटल कृषि मिशन और एग्रीस्टैक के तहत किसान पहचान, फसल प्लॉटों का डिजिटलीकरण, ड्रोन-आधारित सेवाएँ, कीट-रोग निगरानी, मौसम-आधारित और लोकेशन-स्पेसिफिक सलाह जैसी व्यवस्थाएँ बन रही हैं.

लंबे समय तक दालें, खाद्य तेल और कपास- तीनों क्षेत्र हमारी पूरी क्षमता से पीछे रहे. हम दालों और तेलों के लिए आयात पर निर्भर रहे और कपास में भी किसानों को वैश्विक उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा. मोदी सरकार ने इन तीनों को रणनीतिक प्राथमिकता देते हुए अलग-अलग मिशन के रूप में आगे बढ़ाया है. राष्ट्रीय दलहन मिशन के माध्यम से तुअर, उड़द, मसूर, चना और अन्य दालों का क्षेत्र और उत्पादकता बढ़ाने के लिए बीज से लेकर बाज़ार तक पूरी वैल्यू चेन पर काम हो रहा हैङ्क उच्च-उपज किस्में, क्लस्टर आधारित खेती, प्रसंस्करण इकाइयाँ, सुदृढ़ ढाँचा, सरकारी खरीद, भंडारण और निर्यात तक. लक्ष्य यह है कि भारत दालों में पूरी तरह आत्मनिर्भर बने, आयात बिल घटे और किसानों को उच्च मूल्य वाली इन फसलों से स्थायी आय मिले. इसी तरह तिलहन मिशन के ज़रिए सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल और पाम ऑयल जैसी फसलों पर विशेष जोर दिया जा रहा है. यह केवल पैदावार बढ़ाने का कार्यक्रम नहीं, बल्कि खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता, किसानों को बेहतर दाम और देश की तेल सुरक्षा मजबूत करने की दिशा में व्यापक रणनीति है. इसके साथ-साथ कॉटन मिशन के तहत कपास की उच्च-उपज और कीट-रोधी किस्में, उन्नत कृषि-प्रणालियाँ, कीट-प्रबंधन, फसल विविधीकरण, टेक्सटाइल वैल्यूङ्कचेन से बेहतर जुड़ाव और गुणवत्ता सुधार पर काम हो रहा है. कपास भारत के लाखों किसानों के लिए नकदी फसल है; मिशन का उद्देश्य है कि किसान को उत्पादन के साथ-साथ वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा योग्य गुणवत्ता, बेहतर मूल्य और स्थिर आय भी मिल सके.

तेज़ी से बढ़ती रासायनिक निर्भरता, मिट्टी की थकान और भूजल पर दबावङ्क ये सब हमें आगाह कर रहे हैं कि खेती के तरीके बदलने होंगे. इसी समझ के साथ हमारे विजनरी प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में प्राकृतिक खेती को एक राष्ट्रीय मिशन के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है.

(लेखक केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री हैं.)

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश में कानून व्यवस्था पटरी पर नहीं आ रही

दिलीप झा

वजह जो भी हो, लेकिन इस बात कोई इंकार नहीं कर सकता कि अजब गजब मध्यप्रदेश में प्राय: प्रतिदिन अजीब घटनाएं सिलसिलेवार तरीके से हो रही हैं और शासन प्रशासन सब तमाशबीन बने हुए हैं. इसलिए यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि प्रदेश में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. न सड़क हादसे रुक रहे और न ही इसे रोकने के लिए सरकार कोई ठोस योजना लेकर आती हुई दिखाई दे रही है जबकि प्रदेश में हर दूसरे और तीसरे तीन बड़े बड़े हादसे हो रहे हैं. लोग मारे जा रहे हैं. घर परिवार उजड़ रहा है लेकिन किसी को कोई चिंता नहीं है. ट्रैफिक पुलिस व्यवस्था चरमराई हुई. लोगों को जाम से मुक्ति नहीं मिल रही है. खासकर पुराने शहर में बुरा हाल है. क्योंकि यहां सिस्टम को चलने भी नहीं दिया जा रहा है और कहते हैं कि यहां हमारा सिस्टम चलता है. ट्रैफिक पुलिस को सिर्फ चालान काटने के काम में लगा दिया गया है. चालानी कार्रवाई से रेवेन्यू जेनरेशन का लक्ष्य निर्धारित करना होता है. इसलिए ट्रैफिक पुलिस मनमानी तरीके से उल्टे-सीधे काम करती है. गाड़ी के कागजात सही हैं, लाइसेंस भी है. फिर भी कहते हैं 500 के चालान बनवाओ. है न अजीब बात? चालानी कार्रवाई की असलियत यह है कि रकम सरकार के खाते में कम जाती है, पुलिस के जेब में ज्यादा. इनके जेब में पैसों की गर्मी इतनी होती है कि ये चालानी कार्रवाई का विरोध करने वाले वाहन चालकों को थप्पड़ भी जड़ देते हैं. अब तो थाने के पुलिसकर्मी भी नाके लगाकर जमकर वसूली कर रहे हैं. शहर के लोग परेशान हैं और इस वजह से सरकार की किरकरी हो रही है.

यह शत-प्रतिशत सच है कि शहर के किसी भी चौराहे पर ट्रैफिक पुलिस यातायात व्यवस्था संभालते आपको नजर नहीं आती है लेकिन ये पुलिस कर्मी उगाही करते जरूर नजर आएंगे. बोर्ड ऑफिस शहर के व्यस्ततम चौराहों में से एक है लेकिन आज तक यहां की ट्रैफिक व्यवस्था सुधरी नहीं है. ऑटो वाले की दादागिरी यहां चलती है. यह कह सकते हैं कि पुलिस वाहन चालान तक सिमट कर रह गई है. राजधानी में भोपाल में ही नहीं, पूरे प्रदेश में अपहरण, मंगलसूत्र -चेन स्नैचिंग, झपटमारी और साइबर अपराध की वारदातें बढ़ीं हैं. निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि कानून व्यवस्था पटरी पर नहीं है. इसलिए अपराधियों के पौ बारह हैं और आम आदमी अपराध से त्रस्त है. अपराधियों ने 16 जून की रात एक पत्रकार का अपहरण कर चाकू की नोंक पर 24 हजार रुपये लूट लिये. 16 जून को ही नकाबपोश बदमाशों ने प्रभु नगर ईदगाह हिल्स में रात में अपनी दुकान बंद कर घर जा रहे एक किराना व्यापारी की गर्दन पर चाकू रखकर दो लाख रुपए लूट कर फरार हो गए. भोपाल में कमिश्नरेट सिस्टम लागू के बाद भी अपराधियों के हौसले बुलंद हैं तो यह सरकार के लिए बड़ी चुनौती है. वहीं पुलिस के आला अधिकारी कहते हैं कि हमने शहर में चेकिंग प्वाइंट बढ़ा दिए और अपराधियों की धरपकड़ हो रही है लेकिन यह उत्तर संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है. हमारी सरकार रामराज्य की परिकल्पना कर रही है लेकिन इस सपने के साकार करने के लिए सरकार के पास धरातल पर कोई ठोस प्लानिंग नहीं है.

सरकार को खुद के कामकाज का अवलोकन करना चाहिए क्योंकि उनके मंत्रिमंडल में ही कुछ माननीय ऐसे हैं जो कानून व्यवस्था को धता बताने के लिए अपराधियों के साथ गलबहियां करते हुए नजर आते हैं. हद तब हो गई जब एक मंत्री अपने ही सरकार के आदेश के खिलाफ मोर्चा खोल दिया.

अतिक्रमण शहर की बड़ी समस्या

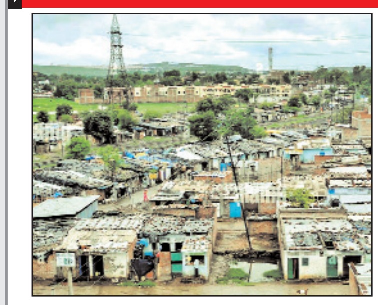

शहर में अतिक्रमण हटाने पहुंचे प्रशासनिक अमला को मंत्री ने फटकार लगाते हुए कहा कि पहले पुनर्वास की व्यवस्था करो फिर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई को अंजाम देना जबकि अतिक्रमण शहर की बड़ी समस्या है. राज्य सरकार की हजारों एकड़ और केंद्र सरकार सैकड़ों एकड़ जमीन पर अतिक्रमणकारियों ने कब्जा कर रखा है. इन जगहों पर अवैध गतिविधियों का संचालन किया जाता है और अपराधियों का अड्डा बना हुआ है. बावजूद इसके इन जगहों से अतिक्रमण हटाने में सरकार विफल रही है. हमारे माननीय विधायक भाजपा और कांग्रेस दोनों वोट बैंक खातिर अतिक्रमणकारियों को शहरों में बसाते हैं. जाहिर है, ऐसे में अधिकारी कोई बड़ी कार्रवाई करने से गुरेज करते हैं. जब जब वे हिम्मत दिखाते हैं तब उनका तबादला कर दिया जाता है.

'टेलीग्राम' पर रोक से यूजर्स को असुविधा

चोट सिर पर लगी हो तो पैर पर पट्टी क्यों बांधी जाए? ऐसा ही हो रहा है. नीट परीक्षा से पहले 'टेलीग्राम' को 22 जून तक के लिए ब्लॉक किया गया. गत 3 मई को हुई नीट परीक्षा के पेपर लीक हो जाने से अब यह परीक्षा फिर 21 जून को नए सिरे से ली जा रही है. इस बार पेपर लीक न होने पाएं इसलिए तमाम सावधानी बरती जा रही है जैसे कि प्रश्नपत्र तैयार करने वालों को एक जगह रखकर उनके बाहरी संपर्क पर पूरी तरह रोक लगा देना, एयरफोर्स के विमानों से पेपर पहुंचाना. प्रधानमंत्री कार्यालय की देखरेख में ऐसे उपाय होना गलत नहीं है. टेलीग्राम पर कुछ लोगों ने फर्जी प्रश्नपत्र बनाकर इसे पुनर्परीक्षा का होने का दावा किया. नीट परीक्षा लेने वाले एनटीए ने इस तरह के दावे ठुकरा दिए और कहा कि पेपर नहीं फूटा है. इसे देखते हुए केंद्र सरकार ने टेलीग्राम पर बंदी लगा दी. टेलीग्राम पर किए गए दावे असत्य हैं यह सिद्ध करना जब संभव है, तो फिर उस पर बंदी क्यों लगाई गई? सीबीआई जांच में पता लग चुका है कि 3 मई के प्रश्नपत्र के सवालों को एनटीए से संबंधित परीक्षकों ने ही लीक किया था. 2024 में भी कुछ स्थानों पर हुए पेपर फूट प्रकरण में स्ट्रॉन्ग रूम के कर्मचारियों का पेपर लीक में हाथ था. जब यह सारी बातें सामने आ चुकी हैं तो यह दलील हास्यास्पद है कि पेपर लीक रोकने के उद्देश्य से टेलीग्राम पर बंदी लगाई गई है. टेलीग्राम बंद करेंगे लेकिन वॉट्सएप का क्या करेंगे? विगत 2 दशकों में परीक्षा प्रणाली संदेह के घेरे में आ गई है. सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर सरकार द्वारा नियुक्त राधाकृष्णन समिति ने एनटीए की जवाबदेही मजबूत करने सिफारिश की थी. एजेंसी द्वारा प्राइवेट वेंडर्स के उपयोग की संसदीय समिति ने आलोचना की थी. परीक्षा प्रणाली को लेकर निरंतर सतर्कता बरतना आवश्यक है.

सरकार ने एनटीए व साइबर क्राइम यूनिट्स के बीच समन्वय मजबूत किया है. जांच एजेंसियों ने पेपर लीक करने वाले माफिया की जांच में तेजी लाई है, लेकिन टेलीग्राम पर बंदी से लगभग डेढ करोड़ यूजर्स को असुविधा हुई है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मन की बात बड़ी ही सलोनी मोदी से मेलजोल बढ़ाती मेलोनी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मन की बात कहने वाले मोदी का मेलोनी से मेलजोल है. मौका और माहौल उनकी मधुर मुलाकात करवा देता है. इस बारे में आपकी क्या राय है?'

हमने कहा, 'मेलोडी खाओ, खुद जान जाओ! समझ में आ जाएगा कि प्रेम से भेंट की गई मेलोडी इतनी चॉकलेटी क्यों होती है ! जहां तक मन की बात है, गीता में कहा गया है कि मन की गति अश्व से भी अधिक चंचल होती है. मन तो हर किसी के पास होता है लेकिन मन की बात सिर्फ प्रधानमंत्री मोदी कह पाते हैं. फ्रांस की पहाड़ी वादियों के इलाके एवियन-ले-बेंस में जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी और इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी की मुलाकात फिर चर्चा में है. दोनों ने एक-दूसरे से गर्मजोशी से हाथ मिलाया. वीडियो में मोदी ने हंसते हुए मेलोनी से कहा कि सोशल मीडिया पर आप काफी लोकप्रिय हैं. इस पर मेलोनी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि हां, हम इंस्टाग्राम पर सबसे मशहूर जोड़ी हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अनेक विश्व नेताओं की तरह मोदी ने मेलोनी से भी अपनापन बढ़ाया है. मेलोनी की आत्मकथा की प्रस्तावना भी मोदी ने ही लिखी थी. इस आत्मकथा का नाम है- आई एम जॉर्जिया! आप तो जानते हैं कि ऑटो बायोग्राफी या आत्मचरित्र में अपने मन की बात लिखी जाती है.'

हमने कहा, 'मन समस्त इंद्रियों का स्वामी है. वह शरीर रूपी रथ को अपनी मर्जी से चलाता है. सुख और दुख दोनों मन की उपज हैं. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत! पंजाबियों में मनजीत सिंह और मनजीत कौर जैसे नाम हुआ करते हैं. अभिनेत्री मीनाकुमारी ने एक फिल्म में गाया था- मेरी बात रही मेरे मन में, कुछ कह ना सकी उलझन में, मेरे सपने अधूरे हुए नहीं पूरे, आग लगी जीवन में! पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अपने मन के बजाय सोनिया गांधी की मर्जी से यूपीए सरकार चलाया करते थे. उन्होंने 10 साल इसी तरह काट दिए. इटली और इंडिया की दोस्ती बड़ी फलदायी है. सबसे पहले राजीव गांधी ने सोनिया से शादी कर भारत-इटली के बीच रिश्ता बनाया था. इटली में रोम है तो हमारे यहां रोम-रोम में बसने वाले राम हैं. इटली में माफिया है तो हमारे देश में भी पेपर लीक माफिया, कोल माफिया, रेत माफिया, भूखंड माफिया, अपहरण फिरौती वसूली माफिया है. इटली का पास्ता और पिज्जा भारत में भी लोकप्रिय हो गया है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12294 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	4	■	5	6
7		■	8		9		
	■	10				■	
11	12			■	■	13	■
■	14		■	15	16		17
18	■	19				■	
20	21		■	22		23	■
24		■	25		■	26	

बाएं से दाएं

1 चलता हुआ, चंचल, विचलित (सं.) 5. भविष्य में आने वाला, आने वाला समय 7. सन का बना मोटा कपड़ा 8. भीगा हुआ, आर्द्र (उर्दू) 10. एक राय, जिसकी राय दूसरे से मिलती है 11. सीख, उपदेश, अच्छी राय 14. शालि जिसमें चावल निकलता है 15. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसके एक ओर रोएं उभरे होते हैं 19. ठंडापन, सर्दी, जड़ता 20. एक प्रकार का हरिण 22. रूठे हुए को प्रसन्न करना 24. कोई शब्द या बात बार-बार बोलने का काम 25. लंबा तथा नुकीला कांटा, गला, कंठ 26. तेज नोक वाला, तेज, तीव्र, प्रखर

ऊपर से नीचे

1. बच्चों का अन्नप्राशन संस्कार, बच्चे को पहली बार अन्न चटाने का संस्कार 2. मोटा और ऊंचा खंभा 3. अधीनस्थ कर्मचारी, सहकारी (उर्दू) 4. कोमल 5. पानी में उबालकर पकाया हुआ चावल 6. बहादुरी 9. बात का संक्षिप्त रूप 10. सहने या बर्दाश्त करने वाला 12. सरल, जो डेढ़ा न हो 13. गृह, मकान, पवित्र तीर्थ 15. बारीक सूत से बना पतला कपड़ा 16. खाते में दर्ज करना 17. लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी 18. परकोटा, चारों ओर से घेरने वाली दीवार 21. किनारा, कूल 23. दोहतां, लड़की का लड़का

Solution 12293

अ	द	ना	■	उ	ल	झ	न
ब	ह	क	ना	■	ग	■	क
■	श	■	वि	मा	न	त	ल
सु	त	■	क	द	■	र	■
ग	■	हू	■	क	पा	स	■
ठि	ठ	क	ना	■	म	ना	ही
त	स	■	का	त	र	■	र
■	क	चू	म	र	■	पा	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष क प्रारंभ में नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, आर्थिक लाभ होगा, उतावलेपन में लिये गये निर्णय हानिकारक रहेंगे, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, मित्र के सहयोग से उदासीनता दूर होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ का योग है, व्यवसाय में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों की सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उतावलेपन पर लिया गया निर्णय हानिकारक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये व्यक्तित्व में विकास होगा, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्वान होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. स्वाभाव से चंचल और जिद्दी होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. खेलों के प्रति अधिक रूचि रखेगा. किसी कला के क्षेत्र में उन्नति करेगा.

मेष- नये कारोबार का मन बन सकता है, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, खर्च की अधिकता रहेगी.

वृषभ- विवादास्पद मामलों से अभी आप दूर रहें, रोगी के कार्यो में खर्च होगा, किसी उत्सव में जाने का अवसर मिलेगा, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

मिथुन- आप किसी के साथ मिलकर नई साझेदारी कर सकते हैं, कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी, व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

कर्क- दूसरों की पूँजी का उपयोग कर आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं,धन के स्त्रोत बढेंगे, कुटुम्बियों से सुख प्राप्त होगा, सम्मान प्राप्त होगा.

सिंह- परिवार में समझौते करके चलना लाभकारी रहेगा, घरेलू यात्रा का योग है, अनावश्यक कार्यो में समय खर्च होगा, दौड़धूप करना पड़ेगी.

कन्या- करीबी रिश्तेदारों की चिन्ता होगी, शुभ कार्यो की शुरूआत संभव है, निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा, उन्नति होगी.

तुला- मित्र या रिश्तेदार की मदद करना होगी, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, नौकरी में लाभ होगा, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

वृश्चिक- पैतृक संपत्ति संबंधी विवाद सामने आ सकते हैं, महत्वपूर्ण निर्णय अभी टाल दें, कोई समस्या दूर होगी, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

धनु- महत्वपूर्ण कार्य अटक सकते हैं, सावधानी रखकर कार्य करें, समय का सदुपयोग करें, किसी तरह की चोट मोच से शारीरिक कष्ट हो सकता है.

मकर- घर की साज सज्जा नवीनीकरण का मन बनेगा, उच्च शिक्षा का अवसर मिलेगा, पारिवारिक चिन्ता रह सकती है, कार्यो में प्रगति होगी.

कुम्भ- आप योजनाओं को समय से पहिले पूरा कर सकते हैं, जिससे अच्छा लाभ होगा, भागदौड़ अधिक करना होगा, व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

मीन- कार्यक्षेत्र में सफलता के लिये नई तकनीक सीख सकते हैं, लेखनादि के कार्यो मे सफलता मिलेगी, संतान प्राप्ति एवं सुख प्राप्ति का योग है.

उदयकालीन ग्रह चाल

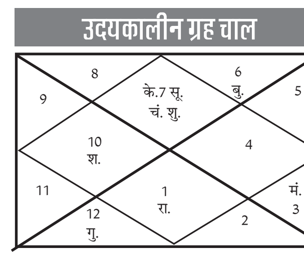

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी शनिवासरे रात 8/41, मघा नक्षत्रे दिन 2/43, वज्र योगे शाम 6/18, कौलव करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार सिंह, पर्व- श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत, शु.रा. 5, 7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी को मघा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा के भाव में जोरदार तेजी होगी, गुड़ खांड़, में नरमी का रूख रहेगा, बादाम मीन, के भाव में समता रहेगी.भाग्यांक 1415 है.

SUDOKU 7426

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

• प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. • पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. • पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7425

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1